प्रथम अध्याय

# 'भगवतीचरण वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

**जीवन वृत्त तथा व्यक्तित्व :**

जन्मस्थान, जन्म तिथि, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा।

**कृतित्व :**

कवि की कृतियाँ - उपन्यास-कहानियाँ-काव्यसंग्रह।

## प्रथम अध्याय

# भगवतीचरण वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्री भगवतीचरण वर्मा हिंदी साहित्य के वरिष्ठ लेखक और कवि माने जाते हैं। हिंदी साहित्य में उनके प्रधानतः तीन रूप प्रसिद्ध हैं - कवि, उपन्यासकार और कहानीकार। इसके अलावा उन्होंने नाटक और निबंधों में भी अपना मौलिक योगदान दिया है। वर्माजी को कवि के रूप में छायावादी विचारधारा का कवि माना जाता है। परंतु कवि की अपेक्षा उनका कथाकार का रूप ही अधिक प्रसिद्ध रहा है।[1] हिंदी साहित्य में उन्होंने लगभग सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई है। वर्माजी साहित्यकार के रूप में युगश्रेष्ठ समाज सुधारक माने जा सकते हैं। उनके विचार क्रांतिकारी दिखाई देते हैं। वे प्रेमचंदजी के कालखंड के लेखक हैं। भगवतीचरण वर्मा स्वयं अपने बारे में कहते हैं कि - "मैं कवि बाद में हूं, कहानी लेखक और उपन्यास लेखक पहले हूं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास और कहानी के रूप में वे विशेष सफल हुए हैं। इसके साथ ही अपने विचारों की अभिव्यक्ति वे लेखों द्वारा भी करते रहे हैं। किसी भी साहित्यकार को अच्छी तरह समझने के लिए यह आवश्यक है कि उसके पूर्ण कृतित्व का अध्ययन किया जाए।[2]

किसी भी साहित्यकार के साहित्यानुशीलन के पूर्व उसके व्यक्तिगत जीवन, स्वभाव, युगविशिष्ट - जिसमें उसका व्यक्तित्व विकसित होता है - इनपर प्रकाश डालना आवश्यक है। इसके साथ ही साहित्यकार की व्यक्तिगत विशेषताएँ भी उसके साहित्य को समझने में विशेष सहायक होती हैं।

## जीवनी

**1. जन्म :**

सन 1903 ई. का हिंदुस्तान अंग्रेजों की गुलामी में जकड़ा हुआ था। उसी समय उत्तर प्रदेश के भयानक रूढ़ियों, अंध श्रद्धा एवं परंपराओं से ग्रस्त जिला उन्नाव की शफीपुर तहसील में बाबू देवीचरण वर्मा के अग्रज पुत्र के रूप में 30 अगस्त, भादो शुक्ल अष्टमी, दिन रविवार, तीन-चार बजे के बीच ज्येष्ठा नक्षत्र में वर्माजी का जन्म हुआ।

**2. बचपन :**

वर्माजी का सारा बचपन उन्नाव जिले के छोटे-से कस्बे शफीपुर में ही व्यतीत हुआ। सन 1908 ई. में प्लेग की महामारी ने हजारों-लाखों घर उजाड़ दिए और यह गाज वर्माजी के भी परिवार पर गिर पड़ी। भगवतीचरण वर्माजी के पिता बाबू देवीचरण वर्मा का इसी महामारी में देहांत हो गया। पिता की अचानक मृत्यु के बाद कच्ची गृहस्थी माँ के ऊपर आ पड़ी।

**3. शिक्षा :**

वर्माजी सातवीं कक्षा में हिंदी में अनुत्तीर्ण हुए थे तब उनके अध्यापक ने उन्हें 'सरस्वती' आदि पत्रिकाएँ पढ़ने का आवाहन किया। 'सरस्वती' 'भारत-भारती' आदि पत्रिकाएँ और अन्य पुस्तकें पढ़कर उन्होंने अपनी हिंदी सुधारी, और उसी से ही वर्माजी की काव्य-प्रतिभा जाग्रत हो गई। वर्माजी की शुरू में यही असफलता ही इनकी सफलता की सीढ़ी बन गई। सन 1921 में क्राइस्ट चर्च कालेज से वर्माजी ने हाईस्कूल पास किया तथा इंटरमीडिएट के प्रथम वर्ष में पढ़ने लगे। इसी समय वे सिर्फ विद्यार्थी ही नहीं रहे बल्कि वे 'प्रभा', 'शारदा' एवं 'प्रताप' के लेखक तथा कवि के रूप में प्रख्यात होने लगे। उसके बाद उन्होंने 1924 में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक-उपाधि के पाठ्यक्रम के अध्ययनार्थ चले गए। इलाहाबाद

विश्वविद्यालय से वर्माजी ने सन 1926 में बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की सन 1927 में एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर सन 1928 ई में एल.एल.बी. की परीक्षा पास की। वे इलाहाबाद से वकालात करने कानपुर चले आए। वर्माजी वकालात करते हुए साहित्य-साधना भी करने लगे।

**4. परिवार :**

संपन्न परिवार में वर्माजी का जन्म हुआ था।

**5. पिता :**

वर्माजी के पिता श्री देवीचरण वर्मा वकालत पास करके उन्नाव जिले की शफीपुर तहसील में आकर बस गए। वर्माजी जब पाँच वर्ष के थे तभी सन 1908 में इनके पिता प्लेग की महामारी में चल बसे थे।

**6. माता :**

वर्माजी के पिता की जब प्लेग की महामारी में मृत्यु हो गई तो सारी गृहस्थी की जिम्मेदारी माँ के ऊपर आ गई। लेकिन वर्माजी की माँ ने बड़े धैर्य के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए अपने परिवार को सँभाला।

## व्यक्तित्व

भगवतीचरण वर्मा आदर्शवादी और क्रांतिकारी उपन्यासकार और कहानीकार हैं। उनके उपन्यासों में समाज का चित्रण दिखाई देता है। साहित्य-मंडल में अनंत कलाकार निर्माण होते हैं और उनका अंत हो जाता है, परंतु कोई-कोई ऐसा व्यक्तित्व देखने में आता है जिसके देदीप्यमान प्रकाश से संपूर्ण साहित्यिक जगत् आलोकित हो उठता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सहज कवि और उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा का कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व है।

**रहन-सहन :**

'साढ़े चार फीट लंबे, सुडौल, गठा हुआ साँवला चुस्त बदन, मुख पर मधुर मुस्कान और मन में असीम आत्मविश्वास, आँखों में एक प्रकार का विषाक्त, दिल में धधकता हुआ अंगारा, जिस पर इंद्रधनु खेल रहा हो। उनकी बड़ी-बड़ी गोल आँखें हैं। कभी वे विस्फारित नेत्रों से देखते हैं। उनका माथा उन्नत है। लेकिन उनके गाल ऊबड़-खाबड़ मैदान की भाँति लगते हैं' - ये हैं 'चित्रलेखा' उपन्यास के रचयिता वर्माजी। उनके व्यक्तित्व में एक प्रकार की मस्ती दिखाई देती है।

**स्वभाव :**

उनका स्वभाव विद्रोही है। न वे धर्मपर आस्था रखते हैं, और न उपासना में श्रद्धा रखते हैं। यह विद्रोह उनके संपूर्ण साहित्य में देखने को मिलता है। वे बड़े आत्म-सम्मानी थे। उन्होंने कभी भी आत्म-सम्मान और अहं को पराजित नहीं होने दिया है। उनके स्वभाव का और एक गुण है कि वे स्पष्टवादि हैं। अक्खड और स्पष्टवादिता का समन्वित व्यक्तित्व लेकर वर्माजी हिंदी साहित्य में कवि, कथाकार, नाटककार, संपादक, फिल्मी सीनेरिया-लेखक आदि विशेष रूपों से प्रख्यात हुए, परंतु सर्वाधिक प्रसिद्ध कथाकार के रूप में ही हुए। [3]

साफ धुला खद्दर का कुर्ता-पाजामा पहने, सिर पर तिरछी टोपी दिए, मुँह में पान दबाए आहिस्ता-आहिस्ता जब कभी किसी समाज में वर्माजी पहुँच जाते हैं तो उनके आस-पास हँसी और उल्लास की झड़ी-सी लग जाती है। सरल, निश्चल हृदय में आत्मीयता इतनी कि पहली बार मिलकर ऐसा लगता है कि हम जैसे उनके

चिरपरिचित हैं। वे नौजवानों में नौजवान, प्रौढ़ों में प्रौढ़, भावना-प्रधान, मानवता के मूर्तिमान प्रतीक, महाप्राणशक्ति-संपन्न, लक्ष्य के समक्ष वक्ष तानकर कर्म से प्रेरित, नियति से प्रभावित, तथा प्रफुल्लचित्त, अनुभव की अमूल्य सौगात लिए स्वाभिमानी व्यक्तित्व के स्वामी आज भी जवान हैं।

## कृतित्व

बचपन से वर्माजी को पढ़ने-लिखने का शौक रहा है। स्कूल में थे तभी उन्होंने 'सरस्वती', 'भारत-भारती' पत्रिकाएँ अपने अध्यापक के कहने पर पढ़ी। तभी से उनके मन में काव्य-प्रतिभा जाग्रत हुई। तभी 'प्रताप' पत्रिका में उनकी कविताएँ छपने लगीं। वर्माजी के बारे में प्रख्यात उपन्यासकार अमृतलाल नागरजी के शब्दों में - 'नवें दर्जे तक आते-आते वर्माजी सोलह आने साहित्यिक हो गए।' [4]

वर्माजीने भले ही कवि के रूप में साहित्यिक जीवन का प्रारंभ किया था, फिर भी वे कवि की अपेक्षा कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में अधिक प्रख्यात हुए हैं। वे स्वयं कहा करते हैं - 'मैं कवि बाद में हूँ, कहानी लेखक और उपन्यास लेखक पहले हूँ।' कुछ कवि, उपन्यासकार भी होते हैं और कुछ उपन्यासकार कवि भी। अतएव युगस्रष्टा, युगद्रष्टा एवं भविष्य-द्रष्टा ये तीनों विशेषताएँ कभी-कभी उपन्यासों में मिल जाती हैं, पर बहुत कम। जिस उपन्यासकार के उपन्यास-साहित्य में युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा इन दोनों का समन्वय पाया जाता है उसे युग-कथा-साहित्य की संज्ञा दी जाती है। वर्माजी में ये सभी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

वर्माजी साहित्य क्षेत्र में बचपन से ही आ गए हैं। सन 1933 में वर्माजी का प्रथम कविता संग्रह 'मधुकण' प्रकाशित हुआ। उसके बाद वे कहानी और उपन्यासों की ओर मुड़े। इसके साथ इन्होंने नाटक और निबंध भी लिखे हैं। वर्माजी ने जीवन की विषम परिस्थितियों में संघर्षमय रहकर साहित्य का सृजन किया।

## रचनाएँ

हिंदी के उपन्यासकारों में भगवतीचरण वर्मा का स्थान अत्यंत ऊँचा है। अबतक उनके तेरह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं और अभी भी वे सृजनरत हैं। भगवतीबाबू की प्रतिभा चहुँमुखी रही है। उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध होने के पूर्व वे कवि और नाटककार के रूप में प्रख्यात हो चुके थे। किसी भी साहित्यकार को अच्छी तरह समझने के लिए यह आवश्यक है कि उसके पूर्ण कृतित्व का अध्ययन किया जाए। वर्माजी की सबसे पहली रचना 1933 में प्रकाशित हुई वह है - प्रथम कविता संग्रह - 'मधुकण'। उसके बाद उनका पहला उपन्यास 'पतन' प्रकाशित हुआ। 1934 में उनके उपन्यासों में सबसे लोकप्रिय उपन्यास 'चित्रलेखा' की निर्मिति हो गई, इसी उपन्यास ने वर्माजी की कीर्ति में चार चाँद लगा दिए।

### 1. कविता संग्रह :

जिस समय भगवती बाबू ने साहित्यिक जीवन प्रारंभ किया, उस समय किसी भी सृजनशील व्यक्तित्व का कविता से बच निकलना असंभव था। वह सभ्यता और संस्कृति का संक्रांतिकाल था। उस समय संवेदनशील मन पर हलचल से भरे युग में इतने प्रभाव पड़े होंगे कि उन्हें गद्य में बाँधना कठिन रहा होगा। वह कविता के बारे में बताते हैं कि 'कविता एक प्रकृति है, तबियत नहीं मानती थी, तो जब-तब मैं लिख लेता था' [5] उन्हें स्वभावतः कवि सिद्ध करती है। गद्य के क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद अपने मित्रों के कहने से काव्य लेखन करना शुरू किया। वर्माजी के विचार एवं जीवन-दर्शन की सहज झाँकी उनके काव्यों में देखने को मिलती है। उनके प्रकाशित काव्य संग्रह इस प्रकार हैं।

1. मधुकण, 2. प्रेम संगीत, 3. मानव, 4. एक दिन, 5. त्रिपथगा, 6. रंगों से मोह।

**1. मधुकण :**

मधुकण भगवतीचरण वर्माजी का पहला ही काव्यसंग्रह है जो 1932 में प्रकाशित हुआ। मधुकण की कविताओं पर छायावादी प्रभाव है। प्रेम की पीड़ा, तृष्णाजन्य आकांक्षाएँ तथा सृष्टि की अनित्यता कविताओं के प्रमुख विषय हैं। 'मेरी प्यास और आत्म समर्पण' में रूप के उपभोग की तीव्र लालसा है। इन कविताओं में वर्माजी का नियतिवादी तथा व्यक्तिवादी स्वर स्थान-स्थान पर उभरा है। अपने भौतिकवादी दृष्टिकोण के उपरांत कवि सृष्टि की अनित्यता और अदृश्य के आगे मानवीय शक्ति की असमर्थता को भूल नहीं पाता।

'और मद से इठलाती चाल।
किंतु हैं क्षणिक क्षीण आवेश-
प्रबल है प्रबल भयानक काल।'

(क्रय-विक्रय)

इस संकलन की सबसे सफल रचना 'नूरजहाँ की कब्र पर' कही जा सकती है। इसमें जीवन के समस्त उत्थान-पतन की नियतिवादी व्याख्या कवि इन शब्दों में है - दास हो या कोई सम्राट सारे विश्व की स्वामिनी यह भ्रांति है।

अपनी ने लिखी कविता 'तारा' और 'चंद्रमा' के माध्यम से कवि पाप-पुण्य, प्रेम और तृष्णा के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। मगर प्राचीन पौराणिक कहानी को कवि तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहते हैं। 'मधुकण' की कविताओं पर छायावादी प्रभाव देखने को मिलता है।

**2. प्रेम-संगीत :**

1936 में प्रकाशित प्रेम-संगीत वर्माजी का द्वितीय कविता संकलन है। जैसा कि संकलन का शीर्षक इंगित करता है इसमें सभी रचनाएँ शृंगार रस की हैं। प्रेम के भौतिक पक्ष के प्रति आसक्ति और उसे भोगने की आकांक्षा इस काव्य का प्रमुख स्वर है। इसमें उपालंभ की कविताएँ भी सम्मिलित हैं। इनकी कविताओं पर कभी-कभी 'डॉ. बच्चन' का प्रभाव महसूस होता है। वर्माजी के काव्यों में बच्चनजी जैसी मस्ती हर स्थान पर झलकती है। उनकी प्रमुख एक लोकप्रिय रचना है - 'हम दीवानों की क्या हस्ती'।

**3. मानव :**

इस काव्यसंग्रह का प्रकाशन 1940 में हुआ। ये कविताएँ मानव-समाज पर कवि का दृष्टिपात और उसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप सामने आई हैं। यह काव्यसंग्रह छायावादी चिंतन से जरा हटकर है, अलग है। यह मूलरूप में छायावाद से विद्रोही काव्य है। उनकी 'कवि का विशद ज्ञान' रचना छायावादी काव्यधारा और कवि पर स्पष्ट व्यंग्य है। अधिकांश कविताओं में आक्रोश और व्यंग्य का तीखापन उभरा है।

इन कविताओं के माध्यम से कवि की दृष्टि जीवन दर्शन पर, समाज में व्याप्त विषमता पर केंद्रित होती है। उसी प्रकार 'विषमता', 'भैंसागाड़ी', 'ट्राम' जैसी कविताओं में कवि का विशुद्ध प्रगतिवादी रूप उभरकर आता है। उनकी 'राजा साहब का वायुयान' एक व्यंग्यरचना है। सारे प्रगतिवादी स्वरों के बीच भी कवि अपना बौनापन कभी भूल नहीं पाता। वह स्वीकार करता है कि मनुष्य की शक्ति अदृश्य की शक्ति के आगे बौनी है।

**4. एक दिन :**

'एक दिन' वर्माजी की मुक्त छंद की कविताओं और विचार-प्रधान ललित गद्‌य का संकलन है। वर्माजी आधुनिक कविता के प्रति विशेष सम्मान नहीं रखते और मुक्त छंद के प्रति तो बिलकुल ही नहीं। इनकी ज्यादा से ज्यादा कविताएँ बदलते हुए सामाजिक परिवेश पर हैं और उनमें व्यंग्य का स्वर प्रधान है। कविताओं के शिल्प पर निराला का प्रभाव परिलक्षित होता है। नीचे लिखित पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है -

> 'श्रांत।
> संध्या विवर्ण, जीर्ण-शीर्ण दिग्-दिगंत
> वनस्थली धूमिल,
> तरुणी के दृग स्वप्निल,
> विहगावली तंद्रिल।'

इस काव्य संग्रह में कवि के आत्मचिंतन तथा उसकी आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समन्वय है। 'चित्रलेखा' उपन्यास की तरह इसमें पाप-पुण्य पर कवि ने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से विचार किया है : 'जीवन विषमताओं का समूह है - और विषमताओं को उत्पन्न करने का श्रेय तुम्हें ही है मेरे देवता। फिर पाप-पुण्य, भला-बुरा यह सब क्यों?' [6] कवि व्यक्ति की सत्ता को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान देता है। जैसे 'हे मेरे स्वामी। तुम सरिता हो और हम सब नन्हीं-नन्हीं बूँदे हैं।' [7]

**5. त्रिपथगा :**

1956 में प्रकाशित इस संग्रह में वर्माजी के तीन रेडियो रूपक संगृहीत है। उसी में से एक 'महाकाल' नाम का रूपक है। शेष दो याने - 'कर्ण' और 'द्रौपदी' महाभारत कथाओं पर आधारित हैं। इन रूपकों में घटनाओं के चित्रण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कवि ने अपनाया है। कवि का वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मतलब है - घटनाओं के दैवी पक्ष को यथार्थवादी तथा व्यावहारिक दृष्टि से देखना। इसकी पूरी जानकारी कर्ण और द्रौपदी रूपकों में देखने को मिलती है।

उन दोनों रूपकों में से 'कर्ण' में कवि ने कर्ण के मनोविज्ञान को ही प्रमुख रूप से सामने रखा है। इस काव्यरूपक से मानव की महानता पर कवि की आस्था दिखाई पड़ती है। इसमें कर्ण इंद्र के देवत्व की भर्त्सना इन शब्दों में करता है -

> 'लो अपना अमरत्व, न मुझको चाहिए
> मैं मानव हूँ शिवि, दधीचि के वंश का।' [8]

उसी प्रकार कवि 'महाकाल' में भी मानव की सीमाओं और अक्षमताओं पर प्रकाश डालता है। वर्माजी के व्यक्तित्व में जो नियतिवादी दृष्टिकोण है वही हमें इस महाकाल में देखने को मिलता है। वह इसमें मानते हैं कि चेतना एवं शक्ति, जो सृष्टि के आदिस्रोत हैं, महाकाल के अभिन्न हैं। 'द्रौपदी' में कवि द्रौपदी की विडंबनापूर्ण स्थिति का विश्लेषण करता है। हर एक बात में विडंबना है, जैसे की द्रौपदी के जन्म के पीछे ही घृणा काम कर रही थी, और द्रौपदी का स्वयंवर भी राजा द्रुपद से प्रतिशोध लेने के लिए एक माध्यम था।

### 6. रंगों से मोह :

1968 में प्रकाशित इस संकलन में वर्माजी की अपेक्षाकृत प्रौढ़ रचनाएँ दिखाई पड़ती हैं। उनका नियतिवादी चिंतन यहाँ पर स्पष्ट देखने को मिलता है। चिंतन का मतलब है - जिसमें छायावादी निराशा और जिज्ञासा विद्‌यमान है।

'रंगों से मोह' इस काव्य संग्रह की सर्वश्रेष्ठ रचना है 'सीमाओं से मोह'। इस कविता में जीवन की सहजता और सौंदर्य के प्रति कवि की अनुरक्ति झलकती है। इन सभी में कवि का जो निरालापन है वह इसमें देखने को मिलता है। सभी में कवि की मस्ती का स्वर प्रमुख हो उठा है। इस प्रकार वर्माजी के काव्यसंग्रह हैं।

### 2. कहानी-साहित्य :

हिंदी साहित्यलेखन में जब हिंदी कथा-साहित्य अपने विकसित रूप पर पहुँचा उसी समय वर्माजी ने कहानी लिखना शुरू किया था। उन्होंने हिंदी कहानीसाहित्य में प्राण भरने का काम किया है। अपनी कहानियों द्‌वारा उन्होंने हिंदी कहानी को शक्ति और गति प्रदान की। उनकी कहानियाँ पूर्णतः सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं।

वैसे तो वर्माजी की साहित्य की शुरुआत काव्य से हुई है। लेकिन वह काव्य से ज्यादा कहानीकार और उपन्यासकार के नाम से अधिक प्रख्यात है। उनकी हर कहानी 'रोचक' है। उनकी हर कहानी गहरी नहीं है किंतु मन को बांधने में सक्षम है। वर्माजी की कहानियों में औत्सुक्य को प्राधान्य रहा है। जैसे की इंस्टालमेंट, विक्टोरिया क्रास, प्रायश्चित, दो बांके आदि छोटी-छोटी ट्रिक कहानियाँ हैं जिनमें चरम सीमा पर सारा औत्सुक्य केंद्रित हो जाता है ऐसा दिखाई देता है। उन्होंने जीवन के विविध रूपों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

### 1. इंस्टालमेंट :

'इंस्टालमेंट' वर्माजी का पहला कहानी संग्रह है। इनकी कहानियों को पढ़कर लगता है कि कहानी कहना ही लेखक का उद्‌देश्य है। इनमें से कई कहानियाँ घटना प्रधान हैं - प्रेजेन्टस, वर्मा हम भी आदमी थे काम के, कुंवर साहब मर गए, एक अनुभव, एक विचित्र चक्कर है, परिचयहीन यात्री, इंस्टालमेंट - ऐसी ही कहानियाँ हैं। वर्माजी की कहानियाँ पढ़कर ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि उनके अंदर एक पैनी दृष्टिवाला व्यंग्यकार विद्‌यमान है, जो इन कहानियों के पीछे से जीवन की विसंगतियों पर मौज में ही सही मुस्कुराता रहता है। 'प्रायश्चित' वर्माजी की अत्यंत प्रसिद्‌ध व्यंग्य-रचना है। बेकारी का अभिशाप, चाय, एक पेग और कहानियाँ आधुनिक सभ्यता की अर्थ-लिप्सा का चित्रण करती हैं। इनके उपन्यास और नाटकों में आधुनिक सभ्यता के प्रति असंतोष व्यक्त किया गया है।

### 2. दो बांके :

इस कहानी संग्रह की विशेषता इसकी छोटी-छोटी किंतु तीव्र भाव-बोध की कहानियाँ है। डॉ. अष्टभुज पांडेय वर्माजी के कहानियों के बारे में कहते हैं कि 'वर्माजी के कथानक सरस, एकोन्मुख, क्षिप्र और यथार्थ होते हैं।' [9] 'दो बांके' कहानी संग्रह की कहानियाँ छोटी-छोटी हैं, मगर जीवन-मूल्यों के प्रश्नों को बड़े तीखे रूप में सामने रखती हैं। ये कहानियाँ हिंदी कथा-साहित्य की निधियाँ हैं। उनमें से 'दो पहलू' एक छोटी-सी कहानी है, किंतु मानव-जीवन के दो चित्रों को प्रस्तुत करके लेखक जीवन की सार्थकता का तीखा प्रश्न उठाता है। इसी तरह 'काश, कि मैं कह सकता' का प्रश्न है, किसने शरीर बेचा - किसने आत्मा बेची - और क्यों? इसमें

बदलते संदर्भों में घिसते हुए मानवीय रिश्तों और आदमी के सहज व्यक्तित्व के टूटने की ट्रेजीडी चित्रित है। इनमें से कुछ कहानियाँ 'लाइट मूड' की भी हैं। 'तिजारत का नया तरीका', 'अनशन', 'लाला तिकड़मी लाल' इस प्रकार की कहानियाँ हैं। किंतु जिन कहानियों में व्यंग्य उभरा है वे अत्यंत सशक्त रचनाएँ बन गई हैं। इसमें रंजनकारी तत्व तथा परिणाम दोनों ही विद्‌यमान हैं। 'दो बांके' तो अपने कथ्य और शैली की ताजगी के कारण हिंदी की अत्यंत सफल और प्रसिद्‌ध कहानियों में से है। इन कहानियों की भाषा में विद्‌यमान व्यंग्य में कितनी अर्थवत्ता और सार्थकता हो सकती है, इसका प्रमाण इन कहानियों की भाषा है।

### 3. राख और चिनगारी :

'राख और चिनगारी' कहानी संग्रह पूँजीवादी युग में अर्थ के कसते हुए पंजों में सिसकती मानवीय मजबूरियों का संसार प्रस्तुत करता है। इस संकलन में 'राख और चिनगारी', 'वह फिर नहीं आई', 'आवारे' और 'खिलावन का नरक' सशक्त रचनाएँ हैं। 'राख और चिनगारी' आर्थिक समस्याओं में घुटते हुए आदमी की बात कहती तो जरूर है पर कहानी का लहजा रोमांटिक हो गया है। 'वह फिर नहीं आई' कहानी के प्लाट पर लेखक ने बाद में एक लघु उपन्यास भी लिखा है, किंतु कहानी उपन्यास से अधिक सशक्त है। इसमें पात्रों की विवशता और घुटन को कहानी में अच्छा उभार मिला है। 'खिलावन का नरक' कहानी मानवीय रिश्तों के आर्थिक पहलू को उजागर करती है। इनमें उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी 'आवारे' है जिसमें कुछ बेकार नवयुवक परिस्थितियों से जूझते हुए एक साथ रहते हैं। यद्‌यपि उनमें से कोई भी नितांत मजबूर नहीं है और न ही उनके जीवन के कोई महान उद्‌देश्य हैं, किंतु वे सभी स्वाभिमानी है और अपने-अपने मोर्चों पर जूझ रहे हैं। पूरी कहानी चार्ली-चैपलिन की फिल्म की तरह दर्दीले हास्य पर केंद्रित है। कहानी का अंत अत्यंत प्रभावशाली है, जो कहानी को सरल प्रहसन की जगह गंभीर बना देता है।

### 3. नाटक :

हिंदी साहित्य में प्रसादोत्तर हिंदी नाटकों की विकसित होती हुई परंपरा में भगवतीचरण वर्मा का भी योगदान रहा है। वर्माजी ने अधिक नाटक नहीं लिखे हैं, पर जितना भी उन्होंने लिखा है उस आधार पर उन्हें सफल नाटककार कहा जा सकता है। उन्होंने दो नाटक और कुछ एकांकी लिखे हैं। व्यक्ति के प्रति उनका जैसा आग्रह उपन्यासों में दिखलाई पड़ता है, वैसा नाटकों में नहीं। अपने नाटकों तथा एकांकियों को उन्होंने अधिकाधिक मंचीय बनाने का प्रयास किया है जिसमें उन्हें सफलता भी मिली है।

### 1. बुझता दीपक :

इसमें वर्माजी के तीन एकांकी और एक नाटक संगृहीत हैं। तीनों एकांकी और नाटक अभिनेयता की कसौटी पर खरे उतरते हैं। 'दो कलाकार' और 'सबसे बड़ा आदमी' हास्य-प्रधान एकांकी हैं। लेखक ने स्वयं ही भूमिका में लिखा है, 'ये दो नाटक मैंने चुटकुलों के तौर पर लिखे थे।' [10] 'दो कलाकार' में एक लेखक और एक चित्रकार की फटीचर हालत दिखलाई गई है और परिस्थितियों में नाटकीयता उत्पन्न करके हास्य की सृष्टि की है। दूसरा एकांकी 'सबसे बड़ा आदमी' अपेक्षाकृत प्रसिद्‌धि प्राप्त एकांकी है। जिसमें लोगों को बेवकूफ बनाकर जेबें साफ कर देनेवाले आदमी को सबसे बड़ा आदमी घोषित किया है। उक्त दोनों एकांकी हँसी-मजाक वाले एकांकी हैं।

तीसरा एकांकी 'चौपाल' व्यंग्य-प्रधान एकांकी है। जिसमें ग्रामीण समाज के बड़े लोगों की मनोवृत्ति दिखलाई गई है। 'बुझता दीपक' पूर्ण नाटक है। राजनैतिक और सामाजिक जीवन में चरित्र का जो संकट विद्‌यमान है उसी संकट को नाटक की विषयवस्तु बनाया गया है। हर क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार और निहित-स्वार्थों

का कैसा दबाव ईमानदार आदमी पर चारों ओर से पड़ता है इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण लेखक ने इस नाटक में किया है। ईमानदार व्यक्ति के कंधे-से-कंधा लगाकर जब तक व्यक्ति आगे बढ़कर स्नेह-दान नहीं करते तबतक मानवता का दीपक नहीं जल सकता। 'एक दिन यह संभव हो सकेगा।' इस आशावाद के साथ नाटक का अंत वर्माजी ने किया है।

## 2. रुपया तुम्हें खा गया :

इस नाटक में लेखक आधुनिक समाज की अर्थ-लिप्सा पर कठोर प्रहार करना चाहता है। आज का मनुष्य रुपया कमाने के पीछे इतना पागल है कि वह समस्त मानवीय गुणों को भूलकर अर्थ-पिशाच बन गया है। संपूर्ण नाटक एक धनी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को ही उभार सका है। इस नाटक की पूरी कहानी सेठ मानिकचंद के जीवन पर ही केंद्रित है।

सेठ मानिकचंद चोरी के रुपयों से करोड़पति बन जाता है और फिर रुपया उसके जीवन का केंद्रीय भाव हो जाता है। इन रुपयों की हवस इतनी बढ़ती है कि वह मानवता, निजी संबंध, ममता, प्रेम जैसी कोमल भावनाएँ सभी उसके जीवन से समाप्त हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में एक दिन ऐसा आता है कि वह बीमार पड़ता है। उसे सही स्थिति का आभास होने पर वह विक्षिप्त हो जाता है। उसी विक्षिप्त अवस्था में यह सत्य उसके सामने आता है कि वह रुपए को नहीं बल्कि रुपया उसे खा गया है। यह नाटक कथोपकथन के कारण भी प्रभावशाली बना है। जयलाल के संवाद घटना के अंदर छिपे हुए व्यापक सत्य को उजागर करते हैं। वह कहता है, 'दिमाग तो हर पैसेवाले का खराब हो जाया करता है, अगर आप पैसा पैदा करने की प्रवृत्ति को बीमारी समझ लें।' अंत में मानिकचंद अर्थ-पिशाच होते हुए भी सहानुभूति के योग्य बन जाता है। यह नाटक उस समय लिखा गया था जब हिंदी में मंचीय नाटकों का अभाव था। अतः इसका मंचीय होना इसकी विशेषता मानी जा सकती है, यद्यपि दृश्यपरिवर्तन कुछ अधिक हैं।

## 4. निबंध :

वर्माजी ने हिंदी साहित्य के निबंध-साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। उनके निबंधों को हम दो वर्गों में रख सकते हैं। एक तो साहित्यिक निबंध है - जिनमें उन्होंने साहित्य की विधाओं पर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रकट की हैं। दूसरे निबंधों में समाज वर्ग की विविध समस्याओं पर विचार किया है। इनमें वर्माजी की व्यक्तिवादी विचारधारा का परिचय मिलता है। प्रमुखता से सामाजिक निबंधों में यह बात परिलक्षित होती है। समाज में प्रचलित कितनी ही मान्यताओं को लेखक अस्वीकार कर देता है।

## 1. साहित्य की मान्यताएँ :

इस संकलन में निबंधों के माध्यम से लेखक ने साहित्य के विभिन्न पक्षों पर तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। पहले सात निबंध चिंतन-प्रधान हैं जिसमें लेखक साहित्य परक शास्त्रीय मत, मतांतरों में न उलझकर अपना आत्ममंथन सामने रखता है। वर्माजी के साहित्य को अच्छी तरह समझने में ये निबंध अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

लेखक ने पहले निबंध 'भावना, बुद्धि और कर्म' में कला विषय में अपनी विचारधारा प्रकट की है। भगवतीबाबू के मतानुसार 'कला का स्रोत भावना में अवश्य है, लेकिन कला अपना रूप ग्रहण करती है बुद्धि की सहायता से।' [11] वर्माजी साहित्य में विचारों की बोझिलता और दर्शन की अधिक घुसपैठ को नहीं मानते। और यह स्वीकार करते हैं कि साहित्य भावनात्मक होना चाहिए, तथा उसमें किसी निश्चित सामाजिक, राजनैतिक विचारधारा के बजाय लेखक के व्यक्तित्व और उसकी अनुभूतियों की झलक होनी चाहिए। शेष

निबंध चिंतन-प्रधान न होकर विश्लेषणात्मक हैं - जिनमें साहित्य की विधाओं पर चर्चा है। लेखक ने उपन्यास, कहानी, कविता, रेखाचित्र, निबंध, शब्दचित्र, नाटक पर अपने विचार रखे हैं।

कविता पर लेखक के तीन निबंध हैं -

1. परंपरागत कविता : छायावाद,
2. प्रगतिवाद : उपयोगिता अथवा प्रचार,
3. प्रयोगवाद अथवा नई कविता।

लेखक छायावादी कविता का समर्थक है क्योंकि उस 'कविता की सभी मान्यताएँ' इस कविता में विद्यमान हैं। वर्माजी व्यक्तिवादी होते हुए भी सामाजिकता की सीमा को स्वीकार करते हैं : 'साहित्य का क्षेत्र भावना है' और साहित्य का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन। सामाजिक रूप से यह भावना 'गुण' की कोटि की होनी चाहिए।

**2. हमारी उलझन :**

इस संग्रह के निबंध विश्लेषणात्मक न होकर विवेचनात्मक है। इन निबंधों में सामाजिक समस्याओं और प्रचलित परंपराओं पर लेखक के विचार प्राप्त होते हैं। यह संकलन भगवती बाबू को समझने का अच्छा माध्यम है।

इस संकलन से लेखक की विचारधारा का पता चलता है। उनकी विचारधारा आधुनिक और कहीं-कहीं काफी क्रांतिकारी है। 'ईश्वर', 'परिग्रहण और दान', 'श्रेणी-भेद' निबंधों में यह बात देखी जा सकती है। लेखक ईश्वर के संबंध में प्रचलित मान्यताओं से विरोध प्रदर्शित करता है और उस ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार कर देता है, जो मंदिरों में बैठकर प्रसाद चढ़वाता है, घंटे बजवाता है। लेखक की मान्यता है कि आस्था और विश्वास आवश्यक है, उसके बिना जीवन लक्ष्यहीन है। वर्माजी लिखित 'दीवाली', 'हरखू की बारात', 'होली' में लेखक के सामाजिक विचार सामने आए हैं। यह दिखाई देता है कि वे व्यक्तिवादी होते हुए भी उनके विचार मानवतावादी है। यही विचार 'होली' में दिखाई देते हैं। कुछ पाश्चात्य व्यक्तिवादी तो निष्ठुरता की सीमा तक पहुँच जाते हैं पर इसके विपरीत भगवती बाबू की आस्था मानव और उसके समाज में है। यह ठीक है कि आज मनुष्य स्वार्थ और बेईमानी से चिपका है और अपने कृत्यों के समर्थन में उसने पाप-पुण्य की अपनी परिभाषाएँ गढ़ ली हैं। पर आज का मनुष्य भी गतिमान विकास-चक्र की एक कड़ी है अतः उसे इस स्थिति से ऊपर उठना होगा।

**5. चित्रालेख :**

**1. वासवदत्ता :**

'वासवदत्ता' नामक चित्रलेख भगवतीचरण वर्मा ने मूल रूप से फिल्म के लिए लिखा था। इसलिए उसमें फिल्मी नाटक के ही तत्व विद्यमान हैं। इसे हम हिंदी में प्रकाशित प्रथम चित्रालेख के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। पढ़नेवाले को यह अटपटा न लगे इसलिए भगवती बाबू ने एक लंबी-चौड़ी भूमिका के द्वारा चित्रालेख के तत्वों और उसके लेखन शिल्प पर प्रकाश डाला है।

'चित्रालेख' की कहानी रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता 'अभिसार' पर आधारित है। उस कहानी में फिल्मी तकनीक का ज्ञान उसके लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ है। कहानी में नाटकीयता लाने के लिए वासवदत्ता के अंदर उत्पन्न प्रतिहिंसा का कुछ अधिक प्रदर्शन हो गया है। इसमें वर्णित नायिका का इतना चरित्र-हनन

बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसमें नायक उपगुप्त का चरित्र भी इसमें पूरी तरह उभर नहीं सका है। केवल धनराज का ही चरित्रांकन स्वाभाविकता से उभर सका है। युग के अनुरूप सामाजिक प्रवृत्तियों का वर्णन है। जैसे मदिरा की गोष्ठियाँ और कुक्कुटों की लड़ाई। यह वर्णन बड़े ही सहज ढंग से चित्रलेख में स्थान प्राप्त कर सका है। इससे चित्रलेख जीवंत बन सका है। कुल मिलाकर यह एक सामान्य कृति नजर आती है।

### 6. उपन्यास-साहित्य :

उपन्यास में यथार्थ जीवन का चित्रण होता है। इसलिए यह मानव जीवन की निकटतम विधा है। उपन्यास वह विधा है जिसमें कृतिकार अधिक से अधिक विद्‌यमान रहता है। विचार और चिंतन का जैसा प्रक्षेपण उपन्यास में संभव है वैसा किसी अन्य विधा में संभव नहीं है। केवल सौंदर्य और कोमलता के सृजन के लिए उपन्यास नहीं लिखा जाता। केवल मात्र एक कहानी कह देना भी इसका उद्‌देश्य नहीं होता। जब सीमित उद्‌देश्य लेकर कोई लेखक चलता है तब उसकी रचना 'विशिष्ट' नहीं बन पाती। रचना में विशिष्टता आती है, रचनाकार की गहन दृष्टि से और वजनदार कथ्य से। वर्माजी ने उपन्यासों में सामाजिक जीवन में आनेवाली विविध समस्याओं को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। उसके साथ ही समाज में नारी का स्थान क्या और कैसा है? उसे अच्छी तरह प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में व्यंग्य की मात्रा भी बड़ी पैनी मिलती है।

कुशल कलाकार के उपन्यास में युग का सर्वांगीण रूप कलावरण में समाया होता है और उसका विश्लेषण कर हम युग का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। यद्‌यपि उपन्यासकार का जीवन के प्रति एक निश्चित दर्शन और लक्ष्य होता है जिसे वह अपनी कथा के माध्यम से प्रस्तुत कर सत्याभास करता है तथापि उपन्यास मानव-चरित्र एवं उसके यथार्थ जीवन-कार्यों की अभिव्यंजना करनेवाली विधा है। अतएव जीवन की प्रतिच्छवि या चित्र है। 'साहित्यिक क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है कि जिसके द्‌वारा सामूहिक मानव-जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं चिंताओं के साथ संपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो सकता है। मानव-जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अधिक अवकाश उपन्यास में मिलता है उतना अन्य साहित्यिक विधाओं में नहीं।' [12] उपन्यासकार मानव-जीवन का फोटोग्राफर नहीं, चित्रकार अवश्य है। क्योंकि वह यंत्र के सहारे फोटो नहीं बनाता बल्कि एक कुशल चित्रकार की भाँति जीवन के अनेक आश्चर्यजनक तत्वों को समेट कर उनका संबंध रंग एवं कूर्चिका के द्‌वारा मानव-जीवन से जोड़ता है। उपन्यास यथार्थ की प्रतिच्छाया है। वह इस सृष्टि का यथार्थ चित्र है, जिसमें कलाकार उसका सामाजिक रूप-विधान, उसका वर्ग सभी कुछ व्यापक अर्थों में आ जाते हैं। उपन्यास और काव्य के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि उपन्यास का संबंध वास्तविक जगत् से होता है तो काव्य का संबंध मनुष्य की आत्मा से। उपन्यास को गद्‌य-साहित्य का महाकाव्य कहा जाता है। उसमें एवं महाकाव्य में इसीलिए काफी अंतर होता है। 'महाकाव्य' कवि की रचना हुआ करती है और 'उपन्यास' एक कथाकार की कृति है।

वर्माजी के उपन्यास कहीं आत्मकथात्मक शैली में हैं, तो कहीं जीवनी शैली में, परंतु उन सब में कृतिकार के अमर व्यक्तित्व की छाप अवश्य है। विशेषतया वर्माजी के साहित्य में उनके जीवन और व्यक्तित्व का अंकन सर्वाधिक हुआ है। वर्माजी की कृतियों में संपूर्ण बीसवीं शताब्दी का जीता-जागता स्वरूप चित्रित हुआ है। यह निर्विवाद सत्य है कि कवि अपने अतीत से प्रेरित होता है तो उपन्यासकार का प्रेरणा-स्रोत आज का वर्तमान है। मानव एवं उसके युग का सर्वांगीण यथार्थ चित्र अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास में सहज रूप से उभर कर आता है।

वर्माजी के उपन्यासों का अध्ययन करना है तो अनेक प्रकारों के उपन्यास हैं। उनमें अनेक विषय हैं जैसे सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी प्रकार के उपन्यास हैं।

वर्माजी के लिखे उपन्यास इस प्रकार हैं -

| | | |
|---|---|---|
| 1. | पतन | सन 1928 |
| 2. | चित्रलेखा | सन 1934 |
| 3. | तीन वर्ष | सन 1936 |
| 4. | टेढ़े-मेढ़े रास्ते | सन 1946 |
| 5. | आखिरी दाँव | सन 1950 |
| 6. | अपने खिलौने | सन 1957 |
| 7. | भूले-बिसरे चित्र | सन 1959 |
| 8. | वह फिर नहीं आई | सन 1960 |
| 9. | सामर्थ्य और सीमा | सन 1962 |
| 10. | थके पाँव | सन 1963 |
| 11. | रेखा | सन 1964 |
| 12. | सीधी-सच्ची बातें | सन 1968 |
| 13. | सबहिं नचावत राम गुसाईं | सन 1970 |
| 14. | प्रश्न और मरीचिका | सन 1973 |

**1. पतन :**

'पतन' वर्माजी का प्रथम उपन्यास है जिसका प्रकाशन सन 1928 में हुआ। यह एक अस्पष्ट उद्देश्यवाली रचना सिद्ध होती हैं, क्योंकि संपूर्ण उपन्यास में समांतर कथाओं को जोडने में वे असफल हो गए हैं।

इसमें लेखक एक युग विशेष का पतन दिखलाना चाहते हैं। साथ ही नितांत व्यक्तिगत त्रुटियों के कारण कुछ व्यक्तियों का चित्रण अंत तक अस्पष्ट रह जाता है। परिणाम स्वरूप पतन गंभीर और गहरी रचना नहीं बन सकी। वर्माजी का इस उपन्यास से नियतिवादी दृष्टिकोण दिखलाई पड़ता है। इसमें नवाब वाजिद अली शाह से लेकर सामान्य पात्र तक के पतन का कारण भगवती बाबू नियति को मान लेते हैं। जब अवध का राज्य पतन के कगार पर खड़ा था, उसी समय नवाब साहब की विलासिता राज्य के लिए खतरनाक साबित हो रही थी। यहाँ चित्रित नवाब अपने संभावित पतन को 'खुदा की मर्जी' स्वीकार करते हुए परियों के अखाड़े में व्यस्त दिखलाई पड़ते हैं। उनकी लापरवाही के कारण उनके राज्य में चारों ओर रिश्वत और भ्रष्टाचार का बोलबाला था।

इसमें प्रतापसिंह की दानवी वृत्ति का पता चलता है। उसके पास सम्मोहित करने की शक्ति है, और वह इस शक्ति का प्रयोग हमेशा बुरे कर्मों में करता है। उपन्यास में प्रतापसिंह के साथ-साथ रणवीर, सुभद्रा, प्रकाशचंद्र, सरस्वती, भवानी शंकर और गुलनार, बंदेहसन की कहानी भी चलती है। इस उपन्यास में व्यक्तियों का पतन दिखलाया गया है। उसका कारण सामाजिक वातावरण नहीं है, वरन उनके नितांत व्यक्तिगत कारण हैं।

**2. चित्रलेखा :**

सन 1934 में प्रकाशित 'चित्रलेखा' वर्माजी का दूसरा उपन्यास है। उन्हें इसी उपन्यास के कारण बहुत बड़ी लोकप्रियता मिली है। हिंदी में स्पष्ट व्यक्तिवादी चिंतन का प्रारंभ 'चित्रलेखा' से माना जा सकता है। 'चित्रलेखा' हिंदी उपन्यास साहित्य का प्रथम व्यक्तिवादी घोषणा-पत्र है। यह उपन्यास संस्कारों के बोझ से दबी हुई दृष्टि को एक नया आकाश देता है। पाप और पुण्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उपन्यास की रचना हुई है। 'चित्रलेखा' स्पष्ट रूप से भाग्यवाद, निराशावाद एवं अकर्मण्यता का समर्थन करता है। मनुष्य को परिस्थितियों का दास मात्र बना देने से उसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता नष्ट हो जाती है। यह स्पष्टतः सामंतवादी दृष्टिकोण है। इस उपन्यास में वर्माजी ने 'पाप' और 'पुण्य' की समस्या उठाई है। 'पाप' और 'पुण्य' की अपनी सामाजिक मान्यताएँ रहती हैं जो युगानुरूप बदलती रहती है। यदि व्यक्ति यह समझ ले कि पाप और पुण्य कुछ भी नहीं तो समाज में भयंकर अराजकता फैल जाएगी। क्योंकि तब व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य के औचित्य और अनौचित्य का प्रश्न उठाए जाने पर उसे दूसरे के 'दृष्टिकोण की विषमता' बता अपना पक्ष सबल बनाने का प्रयत्न करने लगेगा। इस दृष्टि से 'चित्रलेखा' का सामाजिक महत्व नगण्य-सा रह जाता है।

महाप्रभु रत्नांबर के दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव अपने गुरु से पाप के विषय में जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। पाप की खोज में श्वेतांक सामंत बीजगुप्त के पास तथा विशालदेव योगी कुमारगिरि के शिष्य बनकर चले जाते हैं। चित्रलेखा नर्तकी बीजगुप्त की प्रेयसी होकर वह सम्राट चंद्रगुप्त की सभा में योगी को परास्त करके स्वयं ही उसके आकर्षण में बँध जाती है। वह स्वयं सब छोड़कर योगी के आश्रम में चली जाती है। कुमारगिरि चित्रलेखा को आध्यात्मिक ज्ञान तो नहीं दे पाता, बल्कि स्वयं ही नर्तकी के रूपजाल में फँसकर साधना-भ्रष्ट हो जाता है। बीजगुप्त जीवन के अभाव को यशोधरा से विवाह करके भरना चाहता है। लेकिन जब उसे मालूम होता है कि श्वेतांक यशोधरा से प्रेम करता है तब वह संपत्ति और उपाधि श्वेतांक को दान करके भीखारी बनकर निकल पड़ता है। अंत में नर्तकी चित्रलेखा को अपनी भूल का ज्ञान होता है, पश्चाताप में जलकर कुंदन बन जाती है। जब वह बीजगुप्त के साथ जाना चाहती है तब वह उसे भिखारिन के रूप में ही स्वीकार करता है। इस प्रकार 'पाप और पुण्य' क्या होता है इसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में अद्भुत सफलता वर्माजी को मिली है। 'चित्रलेखा' उपन्यास में कथावस्तु का कोई महत्त्व नहीं है। वह तो साधन मात्र है। उसका प्रमुख अंग दर्शनिकता है। प्रत्येक पात्र तर्क करने में सिद्धहस्त है। क्या सामंत बीजगुप्त और क्या नर्तकी चित्रलेखा सभी दार्शनिक हैं। कारण यह की वर्माजी के इन पात्रों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व न रह कर वे उपन्यासकार के हाथ की कठपुतली बने रहते हैं। सभी पात्र यहाँ परिस्थितियों के दास दिखाई देते हैं।

**3. तीन वर्ष :**

'तीन वर्ष' सन 1936 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में वर्माजी ने आधुनिक समाज का चित्रांकन किया है। इसमें वह संसार चित्रित है, जिसमें आज का मनुष्य जीवित है। आधुनिक व्यवस्था ने मनुष्य के अंदर अर्थ-पिपासा भर दी है। उसने मानवीय संबंधों में कैसी खराश उत्पन्न कर दी है, इस बात को प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट किया है। वर्माजी ने इस उपन्यास में प्रतिष्ठित वकील सर कृष्णशंकर की लड़की प्रभा और वेश्या सरोज को तुलनात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया है। जो स्त्री विवाह को समझौता मात्र मानती है, वह वेश्या का ही रूपांतर है। इसी प्रकार का चरित्र प्रभा का दिखाई देता है। इस प्रभा के प्यार में पागल रमेश अपना विद्यार्थी जीवन किस तरह चौपट कर बैठता है इसका सही चित्रण है। प्रभा की वेश्या वृत्ति जानकर रमेश अंत में प्रभा से कहता है - 'तुम पुरुष से धन लेती हो, पुरुष को अपना शरीर देने के बदले में - है न ऐसी बात और यह वेश्यावृत्ति है - प्रभाजी नमस्कार।'

'तीन वर्ष' उपन्यास से लेखक यह सिद्ध करने में सफल हुआ है कि प्रभा जो मात्र अपनी स्थिति के कारण उच्च वर्ग की महिला कही जाती है, पर वास्तव में वेश्या है और सरोज जो वेश्या दिखलाई पड़ती है, अपने हृदय से वेश्या नहीं है। अपने उच्च गुणों के कारण वह सम्माननीय है। यहाँ पर नारी के आंतरिक गुण-अवगुणों का चित्रण किया है। रमेश का प्रेम के प्रति दृष्टिकोण आदर्शवादी है और वह आर्थिक विषमता को उसमें बाधक नहीं समझता। उसकी दृष्टि में 'प्रेम ईश्वरीय है, दो आत्माओं का बंधन है। प्रेम अनादि है, प्रेम अनंत है। प्रेम ही मनुष्य का प्राण है।' [13]

### 4. टेढ़े-मेढ़े रास्ते :

सन 1946 में प्रकाशित 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' भगवतीचरण वर्माजी का विशुद्ध राजनैतिक उपन्यास है। उपन्यास के एक भाग में गंभीर और सधा हुआ व्यंग्य है। वर्माजी ने इस उपन्यास में पात्रों को अपनी सहानुभूति से वंचित रहकर उनकी गतिविधि में अतिरेक का पुट देकर उनकी खिल्ली उड़ाई है। प्रमुख पात्र रामनाथ उपन्यास का केंद्रीय पात्र है। वह छोटा-सा ताल्लुकेदार है। वह अंग्रेजों के शासन का विरोधी है। रामनाथ के सख्त शासन के कारण उसके पुत्र उनके विरोधी हो गए हैं। उनका बड़ा लड़का काँग्रेसी हो जाता है। दूसरा लड़का उमानाथ जर्मनी से पढ़कर आता है और पूरी तरह कम्युनिस्ट बन जाता है। छोटा लड़का प्रभानाथ क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो जाता है। इस प्रकार सभी के रास्ते अलग-अलग हैं। पूरे कथानक में प्रभानाथ के कार्यों से गतिशीलता आ गई है। इससे राजनीतिक परिवेश का भी पता चलता है।

इस उपन्यास का हर पात्र अपने विचार के प्रति समर्पित है और इसी लिए वे अपनी दृष्टि में और विचारों में दूसरों को गलत मानते हैं। यहाँ रामनाथ की व्यक्तिवादी विचारधारा का सही चित्रण हुआ है।

### 5. आखिरी दाँव :

1950 में प्रकाशित उपन्यास 'आखिरी दाँव' मानवीय नियति की अस्थिरता को दर्शाता है। इस उपन्यास में सामाजिक समस्याओं का वर्णन दिखाई देता है। उपन्यास में पूंजीवादी युग में पनपती अर्थ-पिपासा पर काफी चर्चा है। विशेष कर स्त्री-पुरुष संबंध की नैतिकता की समस्या। कथानक में जीवन की अस्थिरता और अनिश्चितता को सिद्ध किया गया है।

इस उपन्यास की चमेली नायिका है। वह अपने पति और ससुराल के अत्याचारों से पीड़ित होकर बंबई भाग जाती है। क्योंकि गृहस्थी और गरीबी में बैर है और 'गृहस्थी तभी जमाई जा सकती है, जब पास में संपत्ति हो, रुपया-पैसा हो।' चमेली बंबई में सुख-सुविधा से रहने के लिए वेश्या और फिल्म अभिनेत्री का घृणित जीवन बीताने पर विवश होती है। इसमें नियतिवादी जीवन-दर्शन को व्यक्त करनेवाली एक सामान्य कहानी है जो सिद्ध करती है कि मनुष्य का जीवन एक जुए की तरह है - पूर्ण अस्थिर और किसी हद तक दूसरे के हाथ में। इस उपन्यास की एक ही विशेषता यह है कि इसमें बंबई के फिल्मी जीवन, वहाँ के कलाकारों की मनोवृत्ति, सेठों के वासनात्मक हथकंडे, गुंडों का, समाज शक्ति का सुंदर और यथार्थ चित्रण हुआ है। इसमें स्पष्ट रूप से तो निराशा और पलायन की भावना नहीं मिलती परंतु इसका अंत वर्माजी की पूर्व विचारधारा का ही अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करता है। इस उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगता है कि मानो वर्माजी उपन्यास क्षेत्र में अपनी कला का अखिरी दाँव हार बैठे हैं। 'चित्रलेखा' के लेखक से ऐसी निर्जीव कृति की आशा किसी को भी नहीं थी। संभव है कि परिस्थितियों की सर्व शक्तिमत्ता के अनन्य उपासक वर्माजी ने परिस्थितियों के सम्मुख आत्म-समर्पण कर ही इस उपन्यास की रचना की थी। परंतु कलाकार की कला का स्रोत अक्षय रहता है। पता नहीं वह कब किसी अनुपम कृति का सर्जन कर बैठे।

## 6. अपने खिलौने :

1957 में प्रकाशित वर्माजी का उपन्यास 'अपने खिलौने' ने हिंदी उपन्यास क्षेत्र की एक बड़ी कमी को पूरा किया था। प्रारंभ से ही हिंदी उपन्यास साहित्य में हास्य-व्यंग्य की कमी रही है। 'अपने खिलौने' एक स्तरीय हास्य-व्यंग्य उपन्यास के रूप में महत्वपूर्ण है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय समाज की अनेक विकृतियों पर प्रहार करता है।

लेखक ने दिखाया है कि सरकारी, सामाजिक और व्यक्तिगत सभी प्रकार की संस्थाएँ इसी पूँजीवादी मनोवृत्ति के अभिशाप को किस तरह सह रही हैं। अत्यंत रोचक कथानक में परिस्थितियों की विषमता तो हास्य उत्पन्न करती ही है, लेखक की चित्रांकन शैली और पात्रों की अजीब उलझनें भी हास्य को जन्म देती हैं। वर्माजी ने हर तरह से हास्य उत्पन्न किया है। इस उपन्यास का हर वाक्य अपने आपमें मनोरंजक है। वर्माजी ने अपनी विनोदी प्रकृति को अभिव्यक्ति की पूरी छूट इसमें दी है। मीना का परिचय लेखक इस तरह प्रस्तुत करता है - 'इतना कह लेने के बाद, मीना के रूप की बात और रह जाती है। वैसे मैं न जाने कितनी लड़कियों को निष्कलंक रूपवती कहकर उन्हें प्रसन्न कर चुका हूँ, इसी लिए मीना को अद्‌वितीय रूपवती कहकर मैं उन लड़कियों को नाराज करने का दुःस्साहस तो न करूँगा, लेकिन - जी हाँ, आप मेरा मतलब तो समझ ही गए होंगे। दूध का-सा सफेदरंग और उसपर चेहरा गोल-गोल, लंबा-लंबा, यानी गोल और लंबे के बीच में, जो गोल चेहरा पसंद करनेवालों को गोल दिखे और लंबा चेहरा पसंद करनेवालों को लंबा दिखे।' इस प्रकार वर्माजी इस उपन्यास में जगह-जगह पर हास्य-व्यंग्य निर्माण करते हैं।

## 7. भूले-बिसरे चित्र :

1956 में प्रकाशित 'भूले-बिसरे चित्र' को निर्विवाद रूप से भगवतीचरण वर्माजी की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता है। भारतीय जीवन के विविध पक्षों को समेटते हुए इस उपन्यास का कथानक लगभग पचास वर्ष के परिवर्तन की झाँकी प्रस्तुत करता है। भारतीय जीवन में एकत्र कुटुंब पद्धति कैसी होती है, इसका चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है। सन 1885 से 1930 तक के 46 वर्षों का विभिन्न पीढ़ियों का चित्रण है। ज्वालाप्रसाद इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। इस में राजकीय वर्णन के साथ काँग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलन का भी वर्णन किया है। यह उपन्यास वर्माजी की अबतक प्रकाशित कृतियों में सर्वश्रेष्ठ होने के साथ हिंदी उपन्यासों में भी अपना उल्लेखनीय स्थान रखता है। ज्वालाप्रसाद एक तहसीलदार है। वह यह काम ईमानदारी से करता है। उसके पिता मुंशी शिवलाल को यह पसंद नहीं है। ज्वालाप्रसाद का लड़का गंगाप्रसाद डिप्टी कलेक्टर बनता है। गंगाप्रसाद का लड़का नवल अपने पिता के विरोध में आंदोलनों में हिस्सा लेता है। इस प्रकार इस उपन्यास में चार पीढ़ियों का यथार्थ चित्रण किया है। इसमें सभी का चरित्रचित्रण बड़ी सफाई से किया है। इस उपन्यास को राष्ट्रपति पुरस्कार से विभूषित किया गया था। इसमें वर्माजी ने एक परिवार की चार पीढ़ियों का लगभग पचास वर्ष का लंबा इतिहास प्रस्तुत किया है। अंग्रेजों की छत्रछाया में एक कचहरी के अर्जीनवीस की संतति किस प्रकार उन्नति करते-करते मध्यवर्गीय सरकारी अफसर की स्थिति प्राप्त कर लेती है और फिर अंत में उनकी चौथी पीढ़ी सन 1930 के काँग्रेस आंदोलन से प्रभावित हो सरकार से विद्रोह कर काँग्रेसी बन जाती है। इन चार पीढ़ियों के वर्णन क्रम में वर्माजी ने भारतीय समाज की बदलती हुई आर्थिक, नैतिक, धार्मिक आदि मान्यताओं का क्रमिक विकास दिखाने का प्रयत्न किया है।

**8. वह फिर नहीं आई :**

1960 में प्रकाशित 'वह फिर नहीं आई' वर्माजी का लघु उपन्यास है। इसी नाम से उन्होंने एक लंबी कहानी भी लिखी है। कहानी और उपन्यास में केवल कलेवर का अंतर है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया घटना प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका रानी श्यामला किस प्रकार समाज की व्यवस्था में फँसकर शिकार होती है। वह अत्याचार और बलात्कार के भीषण नरक में रहने के लिए मजबूर हो जाती है। इसका सही चित्रण इसमें किया है। उसका पति जीवनराम किसप्रकार छलकपट से रुपया प्राप्त करता है और अंत में स्वयं श्यामला अपने पति को धन जुटाने के लिए अपना शरीर बेचने के लिए प्रस्तुत होती है, इसी का यथार्थ वर्णन तथा समाज जीवन का सही चित्र इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

**9. सामर्थ्य और सीमा :**

सन 1962 में प्रकाशित वर्माजी का उपन्यास 'सामर्थ्य और सीमा' सही अर्थों में एक प्रौढ़कृति है।

'सामर्थ्य और सीमा' में लेखक मनुष्य की सामर्थ्य और उसकी सीमा का मूल्यांकन करता है इसमें मनुष्य किस प्रकार प्रकृति का सहयोगी न बनकर उसका स्वामी बनता गया इसी का वर्णन है। इसमें पाँच व्यक्ति है जो सुमनपुर का विकास करने के लिए आए हैं - पहले - रतनचंद मकोला-उद्योगपति, दूसरे - वासुदेव चिंतामणि-इंजीनियर, तीसरे - ज्ञानेश्वर राव-दैनिक पत्र के संपादक, चौथे - शिवानंद शर्मा-संसद सदस्य, पाँचवें - अल्बर्ट किशन मंसूर-आर्किटेक्ट है। ये पाँचों व्यक्ति यशनगर की सुंदरी, परंतु विधवा रानी मानकुमारी के रूप पर आसक्त होते हैं। हर एक उसकी सहायता करना चाहता है।

ये पाँचों प्रकृति पर स्वामित्व हासिल करना चाहते हैं। लेकिन अंत में आकस्मिक आई तेज वर्षा के कारण यशनगर में रोहिणी नदी में बाढ़ आती है और उसमें वे सब बह जाते हैं। इसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच के संघर्ष का यथार्थ वर्णन किया है।

**10. थके पाँव :**

सन 1963 में प्रकाशित 'थके पाँव' भगवती वर्माजी का लघु उपन्यास है। विवशतावश लेखक ने 'थके पाँव' नाम का रेडियो प्ले लिखा था उसी प्ले को उसने दूसरी बार विवश होकर उपन्यास का रूप दे दिया। निम्न-मध्य वर्ग किस प्रकार शहरी जीवन की घुटन को भोगते हुए आर्थिक संघर्ष करता है इसका चित्रण करना ही उपन्यास का उद्देश्य है। इस उपन्यास का नायक केशव जीवन में उसे अनेक बार संघर्ष करना पड़ा है। और इस संघर्ष का अंत है - मृत्यु, जो असफलता और निराशा का प्रतीक है। इस उपन्यास में केशव के बच्चों के माध्यम से आधुनिक समाज का चित्र सामने आता है। संक्षेप में कहे तो 'थके पाँव' एक सामान्य कृति है।

## अद्यतन रचनाएँ

**1. रेखा :**

'रेखा' उपन्यास सन 1964 में प्रकाशित हुआ। यौन-कुंठाओं से ग्रस्त रोमानी आदर्श और कटु यथार्थ के बीच भटकती हुई विवाहित स्त्री की सच्ची कहानी है।

'रेखा' इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है। दर्शनशास्त्र एम.ए. की छात्र रेखा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के प्रोफेसर डॉ. प्रभाशंकर के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होती है, उनसे शादी भी करती है। रेखा कमजोरी का शिकार बार-बार होती है। ये सभी करते-करते वह प्रेम सिर्फ प्रोफेसर से करती है। वह प्रोफेसर की मृत्यु से विक्षिप्त होती है और इसीको ही नियति का खेल मानती है। इसमें परिस्थितियों के अनेक चढ़ाव-उतार देखने को मिलते हैं।

**2. सीधी-सच्ची बातें :**

'सीधी-सच्ची बातें' 1968 में प्रकाशित वर्माजी का डिमाई आकार का पाँच सौ चौसठ पृष्ठ का बृहत उपन्यास है। उन्होंने इस उपन्यास को 'भूले-बिसरे चित्र' उपन्यास की अगली कड़ी के रूप में लिखा है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोध-छात्र जगत प्रकाश है। उसे राजनीति में रुचि नहीं परंतु मित्र के कहने पर त्रिपुरी काँग्रेस को देखने जाता है। वहाँ पर जसवंत कपूर, त्रिभुवन मेहता, कुलसुम कावसजी तथा मालती बेन से उसका परिचय होता है। उपन्यास के अंत तक जगत प्रकाश कैरम के 'स्ट्राइकर' ती तरह इधर से उधर 'रिबाउंड' होता रहता है। वह कुलसुम के प्रति आकर्षित होता है। रूपलाल इंस्पेक्टर के षड्यंत्र के कारण वह सचमुच का कम्युनिस्ट बनता है। आगे उसकी वाग्दत्ता यमुना का विवाह इंस्पेक्टर से होता है। और कुलसुम परवेज से शादी करती है। इस प्रकार उसे अनेक बार प्रेम में पराजित होना पड़ता है। इसी का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में वर्माजी ने बड़े प्रभावशाली ढंग से किया है।

**3. सबहिं नचावत राम गुसाईं :**

1970 में प्रकाशित भगवतीचरण वर्माजी का उपन्यास 'सबहीं नचावत राम गुसाईं' है। इसमें विश्वयुद्ध के समय जो काला बाजारी और रिश्वतखोरी प्रारंभ हुई थी वह बढ़ते-बढ़ते किस तरह स्वतंत्र भारत में व्यापक रूप धारण करती है - इन बातों का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में बड़ी सफलता से हुआ है।

**4. प्रश्न और मरीचिका :**

1973 में प्रकाशित 'प्रश्न और मरीचिका' भगवतीचरण वर्माजी का नवीनतम उपन्यास है। चार खंडों का यह उपन्यास 15 अगस्त 1947 से लेकर 1963 तक के भारतीय समाज की उथल-पुथल पर आधारित है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के जीवन-मूल्यों के विघटन की कहानी सीधे और सहज रूप में वर्णित है। अत्यंत तीव्रता से पतित होनेवाले भारतीय समाज की कहानी अत्यंत स्पष्ट शब्दों में लेखक ने प्रस्तुत की है। वर्माजी ने यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। वास्तव में यह एक व्यक्ति अथवा परिवार की कहानी नहीं है। समाज के सबसे ऊँचे वर्ग की चरित्रहीनता तथा शाब्दिक आदर्शों की विडंबना को प्रस्तुत किया गया है। इसका नायक उदयराज उपाध्याय है। वह मुसलमान लड़की सुरैया से प्रेम करता है। इसमें हिंदु-मुसलमान वैमनस्य का चित्रण हुआ है।

प्रेमचंदोत्तर औपन्यासिक धारा में वर्माजी के तथाकथित युग का समीचीन अध्ययन नहीं हो सकता। फिर भी एक ही कृति के बल पर संपूर्ण कथासाहित्य में यदि किसी को गौरव दिया जा सकता है तो निश्चित रूप से वह भगवतीचरण वर्माजी को। इसप्रकार वर्माजी का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुमुखी है यह यथार्थ रूप में स्पष्ट होता है।

## पुरस्कार

1. 'भूले-बिसरे चित्र' उपन्यास पर रु. 5000 का राष्ट्रपति पुरस्कार मिला है।
2. सन 1971 में भारत सरकार ने वर्माजी को पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

## विशेष प्रतिनिधित्व

1. हिंदी साहित्य सम्मेलन के मंत्री - 1935
2. हिंदी साहित्य सम्मेलन के काशी अधिवेशन में तरुण साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष - 1940
3. दैनिक पत्र 'नवजीवन' के प्रधान संपादक - 1948
4. आल इंडिया रेडियो के हिंदी सलाहकार - 1950
5. उत्तर प्रदेश सरकार के हिंदी समिति के अध्यक्ष - 1972

वर्माजी इसप्रकार साहित्य क्षेत्र में साहित्य के साथ-साथ युग के श्रेष्ठ विचारक, चिंतक एवं क्रांतिकारी माने जा सकते हैं। उनके साहित्य की कोई सीमा नहीं है।

## निष्कर्ष

श्री भगवतीचरण वर्मा प्रेमचंदोत्तर काल के एक श्रेष्ठ साहित्यकार है। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपना योगदान दिया है। इनके विचार क्रांतिकारी होने के कारण इनके साहित्य में हमें क्रांतिकारी स्वर दिखाई देता है।

वर्माजी के साहित्य से स्पष्ट होता है कि वे बंधन को मानते नहीं, वे नियतिवादी मालूम होते हैं। वे परिस्थितिवादी भी हैं। उसी प्रकार सामाजिक, दार्शनिकता की गहरी अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में दिखाई देती है। वह रूढ़ि-परंपराओं का विरोध करते हैं। उन्हें बचपन से लेकर आगे जीवन में अनेक बार संघर्ष का सामना करना पड़ा है। सभी विधाओं में उनका कार्य सराहनीय है। हिंदी साहित्य में उनका स्थान कथाकार और उपन्यासकार के लिए ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। उनके कथा और उपन्यासों में हम देखते हैं कि जीवन की अनेक समस्याओं-प्रश्नों को, समाज व्यवस्था को ही उजागर किया गया है। उनके साहित्य में उपन्यासों में ज्यादा से ज्यादा नारी के जीवन के ऊपर चित्रण किया है। नारी का समाज में स्थान, संघर्ष इन्हीं का यथार्थ चित्रण उनके सभी उपन्यासों में यथार्थ रूप में सामने आता है।

वर्माजी नियतिवादी दिखाई देते हैं उनका कहना है वह अपना मत 'चित्रलेखा' उपन्यास में रत्नाबर के मुख से स्पष्ट करते हैं। वे मानते हैं मनुष्य कुछ नहीं करता वह सिर्फ साधन है परिस्थितियों का दास है। हमारे हाथ में कुछ नहीं है ऐसे उनके विचार हैं। इसीसे यह स्पष्ट होता है कि वर्माजी नियति पर विश्वास रखते हैं। उन्होंने 'चित्रलेखा' उपन्यास की शुरुआत ही समस्या से की है। यह समस्या एक सामाजिक समस्या है। समाज में किसे पाप और किसे पुण्य कहे? इसी प्रश्न को लेकर उपन्यास की निर्मिति की गई है। इसी प्रकार सभी उपन्यासों में कोई-न-कोई तो समस्या सामने आती ही है। उन्हें नारियों के प्रति आस्था होने के कारण उन्होंने समाज में नारियों का स्थान क्या है, उनकी स्थिति कैसी है इसीका यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

वर्माजीने कहानी, उपन्यास के साथ-साथ अद्‌यतन रचनाओं की निर्मिति की है। उनका साहित्य सहजता से पाठकों को प्रभावित करनेवाला है। उन्होंने समाज के समस्याओं को ही अपने साहित्य का आधार बनाया है। और ये सारी समस्याएँ सत्य हैं।

भगवतीचरण वर्माजी के साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि वर्माजी साहित्य के रूप में प्रेमचंदोत्तर युग के एक श्रेष्ठ कहानीकार तथा उपन्यासकार माने जा सकते हैं। वे बहुमुखी है यह यथार्थ रूप में स्पष्ट होता है।

संदर्भ :


1. 'चित्रलेखा एक परिचय' - श्री राजनाथ शर्मा, श्री द्वारिकाप्रसाद शर्मा - पृ. 1
2. उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा - पृ. 85
3. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना - पृ. 38
4. अमृतलाल के शब्दों में
5. भगवतीचरण वर्मा, रंगों से मोह(प्रस्तावना) - पृ. 4
6. एक दिन, भगवतीचरण वर्मा - पृ. 88
7. एक दिन, भगवतीचरण वर्मा - पृ. 98
8. कर्ण
9. हिंदी कहानी, शिल्प इतिहास, डॉ. अष्टभुज - पृ. 124
10. बुझता दीपक (भूमिका) भगवतीचरण वर्मा - पृ. 2
11. साहित्य की मान्यताएँ, भगवतीचरण वर्मा - पृ. 9
12. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, डॉ. त्रिभुवन सिंह - पृ. 1
13. तीन वर्ष, भगवतीचरण वर्मा - पृ. 54